आई एन यू के हाल के प्रकाशन

GLOBAL COMMUNICATION WITHOUT UNIVERSAL CIVILIZATION
(सार्वभौमिक सभ्यता के बिना वैश्विक संप्रेषण)
Vol I : COEXISTING CONTEMPORARY CIVILIZATIONS:
(खंड I: सहवर्ती समकालीन सभ्यताएं:)

Arabo-Muslim, Bharati, Chinese, and Western
by Guy ANKERL
(अरब–मुस्लिमद्ध भारतीयद्ध चीनीद्ध और पश्चिमी
लेखकः गाइ ऐन्कर्ल)
530 pp. ISBN 2881550045, $50, 40 यूरो अथवा
60 सी एच एफ
अधिक विवरण के लिए देखें, INU Press
(www.inuge.ch/#Press)
ई मेल से ऑर्डर करें: INU@INUGE.CH
या फिर INU PRESS, case 5044, CH-1211 Genève-
11 से मंगवाएं।

कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न, जिन पर इस पुस्तक में चर्चा की गई है:

- क्या हमारे तथाकथित वैश्विक युग में पश्चिमी सभ्यता के अतिरिक्त और भी कोई सभ्यता विद्यमान है?

- "पूर्वी सभ्यता"? क्या पूरब की अवधारणा का अर्थ गैर–पश्चिमी के अलावा और भी कुछ है? या फिर, वास्तव में, एक विशिष्ट चीनी, भारतीय, अरब–मुस्लिम, और पश्चिमी सभ्यता ही मौजूद है।

- क्या चीन और भारत जैसे विशाल सभ्यता–राष्ट्रों का निर्माण एक अद्वितीय ऐतिहासिक उपलब्धि है?

- क्या आर्थिक संबंध हमेशा ही दूसरे प्रकार के संबंधों को प्रभावहीन कर देते हैं, जैसे कि एक ही जातिवर्ग के बीच निर्मित होने वाले या एक ही बोली बोलने वाले समुदायों के बीच के संबंधों को?

- हमारे अंग्रेजी–अमेरिकी नेतृत्व वाले विश्व में "लातीनी" और यहूदी राष्ट्रों की क्या भूमिका है?

- क्या आज अंग्रेजी वैश्विक भाषा है या मात्र एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा?

- क्या चीनी विचार–रचना का चीनी लेखन–प,ति से निकट का संबंध है?

- क्या आज का विश्व (संतुलित) पारस्परिक निर्भरता पर आधारित है? या फिर आधिपत्य पर?

- यदि तथाकथित उत्तरी–दक्षिणी या पूर्वी–पश्चिमी संवाद एक सार्वभौमिक तौर पर स्वीकार्य विश्व– सभ्यता के निर्माण में असफल रहता हैद्व तो फिर मानवजाति के बीच इस प्रकार की सर्वसम्मति बनाने के लिए उपयुक्त व्यवस्था क्या होगी?

INSTITUT INTERUNIVERSITAIRE OF GENEVA
(इंस्टिट्यूट इन्टरयूनिवर्सिटेयर ऑव जिनेवा)

CH-1211 Genève-11, case 5044
टेलीफोन/फैक्सः **41+22+7341718**
ई मेलः **INU@INUGE.CH**

INU

- फ्रांसीसी (www.inuge.ch/#fran)
- जर्मन (www.inuge.ch/#deut)
- स्पैनिश (www.inuge.ch/#espa)
- रूसी (www.inuge.ch/#russ)
- अरबी (www.inuge.ch/#arab)
- चीनी (www.inuge.ch/#chin)
- हिंदी(देवनागरी) (www.inuge.ch/#hind)

दि इन्टरयूनिवर्सिटी इंस्टिट्यूट (आई एन यू) [Interuniversity Institute (INU)] एक पूर्णतः स्वतंत्र, गैर–सरकारी संस्था है, जिसकी स्थापना 1980 में की गई थी। जैसा कि इसके संस्थापक अधिनियम (Founding Act) में उल्लेख है, यह मानव विज्ञान के क्षेत्र में कठोर वैज्ञानिक मानकों का पालन करने वाली विविध पृष्ठभूमियों एवं संबद्धताओं वाली अकादमिक संस्थाओं के बीच सहयोग को बढ़ावा देती है।

- संस्थापक अधिनियम (Founding Act) (www.inuge.ch/#Founding)
- आई एन यू मंच (INU Forum) (www.inuge.ch/#Forum)
- अनुसंधान कियाकलाप और प्राथमिकताएं (www.inuge.ch/#Research, www.inuge.ch/#priorities)
- वर्तमान मुख्य परियोजना:Global Communication without Universal Civilization (सार्वभौमिक सभ्यता के बिना वैश्विक संप्रेषण) (www.inuge.ch/#Current)
- आई एन यू प्रेस (INU Press) (www.inuge.ch/#Press)
- पिछला अनुसंधान नोट (www.inuge.ch/#Last)

आई एन यू विभिन्न महाद्वीपों और सभ्यताओं के लोगों के समूह को निरंतर बढ़ाने का प्रयास करता है, जो इन दो प्रमुख लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहयोग करते हैंः

1) दूसरे विज्ञान या शास्त्रों की ही भांति, मानव विज्ञान के क्षेत्र में भी सार्वत्रिक रूप से स्वीकार्य सिद्वांतों और विधियों का अनुसंधान कर और उन्हें लागू करकेद्व उसे सभी पश्चिम–केंद्रित अथवा सत्तावादी तर्कों व कुतर्कों से मुक्त करना। तदनुसारद्व आई एन यू विशेषकर उन क्षेत्रों में अनुसंधान को बढ़ावा देता हैद्व जहां प्रक्रियाओं व अधिष्ठापन प्रमाणों की दृष्टि से सटीक प्रतिपादन एवं अवधारणाएं तैयार करने लायक विधियां व प्रतिमान विकसित किए जा सकें। इसके उद्देश्य और विधियां विस्तारपूर्वक संस्थापक अधिनियम (Founding act) में बताये गए हैं।

2) विभिन्न मौजूदा सभ्यताओं से उत्पन्न विधियों और उनके संचित ज्ञान के सुव्यवस्थित मूल्यांकन द्वारा एक ऐसी सभ्यता के निर्माण में योगदान देना, जो सचमुच वैश्विक हो।
(देखें वर्तमान मुख्य परियोजना)

अनुसंधान के अलावा, कियाकलापों के विषय हैं – कॉन्फरेन्स आयोजन, लेक्चर, प्रलेखन और प्रकाशन
आई एन यू प्रेस(INU Press).

सचमुच, आई एन यू अवधारणाओं और विचारों को सविस्तार प्रतिपादित करता है, तथ्यों को प्रकाश में लाता है और कार्यवाही का भी प्रस्ताव करता है। यद्यपि आई एन यू अनुशासनहीन सोच और ऐसी जानकारी के प्रसार का विरोध करता है, जिसकी क़वायद विज्ञान के छद्मनाम के तहत की जाती है, फिर भी ज्ञान के निर्माण व उसकी खोज में यह स्व–निर्धारित अनुशासन "वेल्टफ़ेम्ड" मानसिकता को जन्म नहीं देता, बल्कि व्यावहारिक समस्याओं के समाधान में एक जिम्मेदार दृष्टिकोण का सूचक है, जैसा कि लोग और समुदाय महसूस करते हैं। किसी भी वर्ग या व्यक्ति के साथ सभी नए विचारों अथवा तथ्यों पर चर्चा के लिए इसके दरवाजे खुले रहते हैं, भले ही उस वर्ग या व्यक्ति का सामाजिक दर्जा अथवा प्रतिष्ठा कुछ भी क्यों न हो। यह खुलापन, इसके रचनात्मक कार्यों से सभी असंबद्ध बातों को दूर करके, आई एन यू के दृष्टिकोण एवं तात्पर्य को तय करता है। आई एन यू अपनी प्राथमिकताओं के अनुसार अपने अनुसंधान कार्यक्रम तैयार करता है, अधिक व्यापक पाठकगणों के लिए परिणामों का प्रसार करता है, लेकिन यह दूसरों से प्राप्त होने वाले ज्ञान के संप्रेषण हेतु एक निकासी–गृह का भी काम करता है। आई एन यू एक प्रकार का गैर–सरकारी सहकारी विश्वविद्यालय है, जो प्रेरित लोगों को एक साथ ले आता है, एक ऐसा समूह जो अहंकार से नहीं बल्कि साझा हितों के द्वारा आबद्ध है। निश्चित रूप से, यह इन पारंपरिक संस्थाओं को प्रमाण–पत्र या सिफारिशों के तौर पर आगे बढ़ाने का प्रयास नहीं करता, चाहे वे संबद्ध हों या नहीं, पूर्ण हों या एसोसिएट, आदि। वास्तव में, आई एन यू के भीतर संवाद पूर्णतः हितों और ज्ञान की संपूरकता और साझेदारी के द्वारा तय होते हैं। आई एन यू मूलतः किसी भी प्रकार की आत्म–संतुष्टि और फैशनपरस्ती के विरुद्ध है।

आई एन यू के साथ क्यों और कैसे सहयोग किया जाए?

जैसा कि उल्लेख किया गया है, आई एन यू सोपानक्रम संबंधी बातों पर ध्यान दिए बिना **समूहों और व्यक्तियों के सुझावों व तर्कों** के लिए खुला है। यह कठोर ज्ञान–शास्त्रीय मानदंडों को पूरा करने वाले व्यक्तियों और वर्गों को प्रोत्साहित करता है, उनकी सहायता करता है, एवं उनके कार्यों में समन्वय स्थापित करता है।

अपने लक्ष्यों के अनुरूपद्व आई एन यू प्रेस (INUPress) के **अपने प्रकाशनों** और दूसरे अपारंपरिक साधनों के माध्यम से आई एन यू सत्यापित अनुसंधान परिणामों एवं सत्यापनीय विचारों का प्रसार करता है – बशर्ते ये तकनीकें वैज्ञानिक ज्ञान को निर्देशित करने की दृष्टि से उपयुक्त हों और अनुशासनहीन चिंतन की वाहक न बनेंद्व भले ही प्रस्तुतियां कितनी भी आकर्षक क्यों न लगें।

आई एन यू उत्तम विद्वता और वैज्ञानिक सत्यनिष्ठा के अलावा किन्हीं भी अन्य मूल्यों से निर्देशित नहीं है।

आप संप्रेषण की ऊपर बतायी गई किसी भी इलेक्ट्रोनिक विधि से या दूसरी विधियों के जरिये टीका–टिप्पणी भेज सकते हैं। आई एन यू द्वारा **सभी** प्रश्नों के **जवाब** दिए जाते हैं।

व्यावहारिक व वित्तीय कारणों से, आई एन यू के मंच (INUForum) की "सामान्य भाषा" अंग्रजी है; तथापिद्ध संयुक्त राष्ट्र की 6 अन्य भाषाओं – अरबीद्ध चीनीद्ध फ्रांसीसीद्ध रूसी और स्पेनिश में से किसी भी भाषा में – और जर्मन में भी – दिए जाने वाले योगदानों तथा पत्रों पर विचार किया जाएगा।

फीडबैक या जानकारियां यहां भेजें: INU@INUGE.ch.

INU PRESS (आई एन यू प्रेस)

आपके स्थानीय पुस्तक विक्रेता के जरिये या सीधे आई एन यू प्रेस को भेजकर ऑर्डर किए जा सकते हैं।

1. Case postale: 5044, CH-1211 Genève-11,
2. ई–मेल: INU@INUGE.CH
3. साइटः www.inuge.ch , अथवा
4. मार्फतः Amazon.com.

सभी ऑर्डरों का निम्नलिखित में से किसी विधि से पहले ही भुगतान करना अनिवार्य है:

1. इस पते पर मनी ट्रांसफर:
Swiss PostFinance: IBAN CH05-0900-0000-1202-5493-3 अथवा
2. इस पते पर मनी ट्रांसफर:
UBS SA; UBSWCHZH80A; IBAN CH24-0027-9279-CO29-0749-0.

हाल के प्रकाशन

- Dirk Pereboom: **Logique et Logistique. Une initiation**. 2nd enlarged edition. (डर्क पेरेबूम: **लॉजिक एट लॉजिस्टिक। उने इनिशिएशन।** द्वितीय दीर्घीकृत संस्करण।)
ISBN 288155-002-9
233 पृष्ठों में तर्क और सांकेतिक तर्क का एक व्यावहारिक परिचय, जिसमें प्रत्येक अध्याय के साथ अभ्यास व उनके उत्तर भी जोड़े गए हैं।

- Guy Ankerl: **Urbanization Overspeed in Tropical Africa. Facts, Societal Problems, and Policy**. (गाइ ऐन्कर्ल: **उष्णकटिबंधी अफ्रीका में अत्यधिक तीव्र गति से बढ़ता शहरीकरण। तथ्यद्ध सामाजिक समस्याएंद्ध और नीति।**)
ISBN 2-88155-000-2

- Théopiste Butare: **Secteurs traditionnel et moderne dans un processus de développement**. (थियोपिस्ट बुतारे: सेक्ट्योर्स ट्रेडिशनल ऐट माडर्न डैन्स उन प्रोसेसस डि डिवेलपमेन्ट।)
ISBN 2-88155-003-7

अब ये भी उपलब्ध हैं:

- Guy Ankerl: **Global Communication without Universal Civilization**
(गाइ ऐन्कर्ल: **सार्वभौमिक सभ्यता के बिना वैश्विक संप्रेषण**)
Book one: **Coexisting Contemporary Civilizations**
(पुस्तक एक: **सहवर्ती समकालीन सभ्यताएं**)
(**Arabo-Muslim, Bharati, Chinese, and Western**)
(अरब–मुस्लिमद्ध भारतीयद्ध चीनीद्ध और पश्चिमी)
2000. XXIX+501 pp.
ISBN 2-88155-004-5 ISBN in Bookland/EAN 978 288 155 004 1.

विषय–सूची:

आमुख
प्रस्तावना
I. संप्रेषण और सभ्यताएं 1
समस्याएं, दृष्टिकोण, विधियां और प्रस्तुतीकरण
II. अरब–मुस्लिम, भारतीय, चीनी, पश्चिमी सभ्यताएं 49
उनकी अक्षीय संस्था और तीन आधार–रचनाएं (प्रत्येक का समानतायुक्त धार्मिक–ग्रंथद्व प्रजनन समुदायों का आनुवंशिक परिवर्तन और सामूहिक आत्म–संरक्षण)
III. पश्चिम एक विशेष सभ्यता के तौर पर 119
पश्चिमी सभ्यता की पहचान; इसके भाग; अफ्रीकी–ब्राजीली समामेलन और अंग्रजी–अमेरिकी ''घरिया'' (गलन–पात्र या मेल्टिंग पॉट) प्रतिमान
IV. विश्ववाद 245
अंग्रेजी–अमेरिकी प्रभाव मंडल के तौर पर विश्व

"तीसरी दुनिया की मुक्ति"(आधिपत्यपूर्ण) से लेकर सभ्यता–राष्ट्रों के बीच सहयोग तक
- नाम–तालिकाद्ध ग्रंथविज्ञान संदर्भ सहित
- विषय–तालिकाद्ध अवधारणात्मक प्रति–संदर्भों सहित

तैयारी के अधीन पुस्तक दोः A WORLD CIVILIZATION BY FEDERATION OF CIVILIZATION-STATES (सभ्यता राष्ट्रों के संघ से एक विश्व–सभ्यता)

यह गैर–रूढ़िवादी प्रभावशाली अध्ययन पश्चिमी सामाजिक विज्ञानों एवं राजनीति के द्वि–ध्रुवीकरण वाले दृष्टिकोण की मौलिक समालोचना करता है।

"सभ्य पश्चिम" को यह बात स्वीकार करनी चाहिए कि न केवल प्रमुख भूतकालीन सभ्यताएं ही बल्कि एकमात्र वर्तमान सभ्यता के अतिरिक्त और भी वर्तमान सभ्यताएं मौजूद हैं जिनके साथ – कम से कम पहले से ही अनुमान लगाए जा सकने वाले भविष्य में – पश्चिम को सहभाव रखना चाहिए, और साथ ही प्रत्येक सभ्यता को हर दूसरी सभ्यता के साथ भी।

इन वर्तमान सभ्यताओं, और मुख्यतः एक सार्वभौमिक सभ्यता होने के पश्चिम के ढोंग से उत्पन्न समस्याओं, की पहचान करना ही इस कार्य का मुख्य उद्देश्य है।

प्रथम खंड में अरब–मुस्लिम, चीनी, भारतीय और पश्चिमी सभ्यताओं को उनकी अपनी–अपनी मानवशास्त्रीय, भौतिक और धर्म–शास्त्र संबंधी आधारिक–संरचनाओं के अनुसार रेखांकित किया गया है। चूंकि – वर्तमान पश्चिमी "कारोबारी सभ्यता" के अलावा – दूसरी हर सभ्यता इन 3 मूलभूत तत्वों को भिन्न प्रकार से दर्जा देती है और भिन्न मूल्य–पैमाने अपनाती है, और प्रत्येक की अपनी विशिष्ट अक्षीय संस्था भी है।

पश्चिमी विश्व के भीतर अंग्रेजी–अमेरिकी मर्म, लातीनी–कैथोलिक परिधि और डियस्पोरा (प्राचीन फ़िलिस्तीन से यहूदियों का पलायन) के पारस्परिक प्रभाव की विवेचना चीनी और भारतीय सभ्यता–राष्ट्रों तथा इस्लामिक सम्मेलन संगठन (ओ आई सी) के तहत एक साथ लाए गए अरब–मुस्लिम देशों के साथ की जाती है, व उन्हें सामने रखकर तुलना की जाती है।

विश्ववाद के प्रति न्यूयार्क जैसी सांस्कृतिक रचना और घरिया (मेल्टिंग पॉट या गलन–पात्र) से प्रदर्शित पश्चिम–प्रेरित प्रवृति के सापेक्षद्ध ब्राजीली मॉडल को भी अफ्रीकी सभ्यता की जटिलताओं के एकीकरण की दृष्टि से एक अधिक आकर्षक मॉडल बताया जाता है।

पुस्तक के अंतिम, और समापन भाग में द्वितीय पुस्तक का परिचय दिया गया है। इसमें पश्चिमी मनोवृत्ति के मनीकियन सूत्र की जालसाज़ी के साथ चर्चा आगे बढ़ती है, जो कि विश्व को पूरब–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण अथवा ज़्यादा सटीक रूप में पश्चिम और गैर–पश्चिम में बांटता है; अतः यह तथाकथित पश्चिम–तीसरी दुनिया के संवाद को सभ्यताओं के गोलमेज़ संवाद से बदलने के वैध प्रतिस्थापन की मांग करती है। अतः द्वितीय पुस्तक एक अप्रामाणिक संवाद से एक विश्वव्यापी संवाद की ओर जाने का मार्ग तैयार करेगीद्ध जो सभ्यताओं के अनेकत्व पर आधारित हो।

सभ्यताओं की भावी पारस्परिक क्रिया का सदिश निरूपण